Teachingninja.in

Latest Govt Job updates

Private Job updates

Free Mock tests available

Visit - teachingninja.in

UPPSC-UPPCS 2020 Mains

Previous Year Paper

Hindi Literature

Optional Paper 2

Teachingninja.in

No. of Printed Pages : 4

Serial No. 5065715

PSL – 32/20-Paper-II

हिन्दी साहित्य (प्रश्न–पत्र – II)

HINDI LITERATURE (PAPER – II)

निर्धारित समय : तीन घंटे] [अधिकतम अंक : 200

Time Allowed : Three Hours] [Maximum Marks : 200

विशेष अनुदेश :
(i) प्रश्न पत्र दो खण्डों (अ, ब) में विभाजित है ।
(ii) प्रत्येक खण्ड से कम से कम दो प्रश्न हल करते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।
(iii) प्रश्न संख्या एक तथा पाँच अनिवार्य हैं ।
(iv) सभी प्रश्नों के अंक प्रश्न के सम्मुख अंकित हैं ।

Specific Instructions :
(i) Question Paper is divided into two Sections (A, B).
(ii) Answer **five** questions, selecting atleast **two** questions from **each** Section.
(iii) Q. No. **one** and **five** are **compulsory.**
(iv) Marks allotted to **each** question are indicated against it.

खण्ड – अ

1. किन्हीं दो अवतरणों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए । (20+20=40)

(क) संतौ भाई आई ग्यांन की आँधी रे ।
भ्रम की टाटी सबै उड़ानी, माया रहै न बाँधी ।।
हित चित की द्वै थुनीं गिरानी, मोह बलींडा टूटा ।
त्रिस्नाँ छाँनि परी घर ऊपरि, कुबधि का भाँडा फूटा ।।
जोग जुगति करि संतौ बाँधी, निरचू चुवै न पांणी ।
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाणी ।।
आँधी पीछे जो जल बूठा, प्रेम हरी जन भींनां ।
कहैं कबीर भाँन के प्रगटे, उदित भया तम षीनां ।।

Scanned with CamScanner
Teachingninja.in

(ख) सुनहु तात यह अकथ कहानी । समुझत बनइ न जाई बखानी ।।
ईस्वर अंस जीव अबिनासी । चेतन अमल सहज सुखरासी ।।
सो मायाबस भयउ गोसाईं । बँध्यौ कीर मरकट की नाईं ।।
जड़ चेतनहिं ग्रंथि परि गई । जदपि मृषा छूटत कठिनई ।।
तब ते जीव भमउ संसारी । छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी ।।
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । छूट न अधिक अधिक अरुझाई ।।

(ग) अहे वासुकि सहस्र फन !
लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरंतर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्ष: स्थल पर !
शत-शत फेनोच्छवसित, स्फीत फूत्कार भयंकर
घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अंबर
मृत्यु तुम्हारा गरल दंत, कंचुक कल्पांतर
अखिल विश्व ही बिवर,
वक्र कुंडल
दिङ् मंडल !

(घ) ओ मेरे आदर्शवादी मन
ओ मेरे सिद्धांतवादी मन
अब तक क्या किया ?
जीवन क्या जिया !!
उदरम्भरि बन अनात्म बन गये
भूतों की शादी में कनात-से तन गये
किसी व्यभिचारी के बन गए बिस्तर,
दु:खों के दागों को तमगों-सा पहना
अपने ही ख़यालों में दिन-रात रहना
असंगत बुद्धि व अकेले में सहना
जिन्दगी निष्क्रिय बन गयी तलघर,
अब तक क्या किया ?
जीवन क्या जिया !!

Scanned with CamScanner
Teachingninja.in

2. (क) "काव्य–कला की दृष्टि से 'भ्रमरगीत' सूरदास की प्रतिभा का सर्वोच्च प्रकाशन है ।" इस कथन की सत्यता प्रमाणित कीजिए । 15

(ख) तुलसीदास की सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि की विवेचना कीजिए । 15

(ग) वर्तमान संदर्भों में कबीर–वाणी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए । 10

3. (क) जायसी की प्रेम–भावना पर प्रकाश डालिए । 15

(ख) बिहारी की बहुज्ञता का सोदाहरण परिचय दीजिए । 15

(ग) कामायनी के आधार पर जयशंकर प्रसाद की सौन्दर्य चेतना का विश्लेषण कीजिए । 10

4. (क) 'सुमित्रा नंदन पंत कोमल कल्पना के कवि हैं ।' इस कथन की समीक्षा कीजिए । 15

(ख) 'राम की शक्ति पूजा' के काव्य–सौष्ठव पर प्रकाश डालिए । 15

(ग) 'असाध्य वीणा' के कथ्य का विश्लेषण कीजिए । 10

खण्ड – ब

5. किन्हीं दो गद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : (20+20=40)

(क) सरल युवक ! इस गतिशील जगत् में परिवर्तन पर आश्चर्य ! परिवर्तन रुका कि महापरिवर्तन–प्रलय–हुआ ! परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है । स्थिर होना मृत्यु है, निश्चेष्ट शांति मरण है । प्रकृति क्रियाशील है । समय पुरुष और स्त्री की गेंद लेकर दोनों हाथ से खेलता है । पुल्लिंग और स्त्रीलिंग की समष्टि अभिव्यक्ति की कुंजी है । पुरुष उछाल दिया जाता है, उत्क्षेपण होता है । स्त्री आकर्षण करती है । यही जड़ प्रकृति का चेतन रहस्य है ।

(ख) श्रद्धा का व्यापार स्थल विस्तृत है, प्रेम का एकांत । प्रेम में घनत्व अधिक है और श्रद्धा में विस्तार । किसी मनुष्य से प्रेम रखने वाले दो ही एक मिलेंगे, पर उस पर श्रद्धा रखने वाले सैकड़ों, हजारों, लाखों क्या करोड़ों मिल सकते हैं । सच पूछिए तो इसी श्रद्धा के आश्रय से उन कर्मों के महत्व का भाव दृढ़ होता रहता है, जिन्हें धर्म कहते हैं और जिनमें मनुष्य समाज की स्थिति है ।

(ग) जिसे संसार दु:ख कहता है, वही कवि के लिए सुख है । धन और ऐश्वर्य, रूप और बल, विद्या और बुद्धि, ये विभूतियाँ संसार को चाहे कितना ही मोहित कर लें, कवि के लिए यहाँ जरा भी आकर्षण नहीं हैं; उसके मोद और आकर्षण की वस्तु तो बुझी हुई आशाएँ और मिटी हुई स्मृतियाँ और टूटे हुए हृदय के आँसू हैं । जिस दिन इन विभूतियों में उसका प्रेम न रहेगा, उस दिन वह कवि न रहेगा । दर्शन जीवन के इन रहस्यों से केवल विनोद करता है, कवि उनमें लय हो जाता है ।

(घ) दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं । सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुखी वह है जिसका मन परवश है । परवश होने का अर्थ है – खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ–हुजूरी । जिसका मन अपने वश में नहीं, वही दूसरे के मन का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर रचता है, दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है । कुटज इन सब मिथ्याचारों से मुक्त है ।

Scanned with CamScanner
Teachingninja.in

6. (क) प्रसाद–युगीन राष्ट्रीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में स्कंदगुप्त नाटक की समीक्षा कीजिए। 15

(ख) 'अंधेर नगरी' प्रहसन के कथ्य का युगीन संदर्भों में विश्लेषण कीजिए। 15

(ग) रामचन्द्र शुक्ल की निबंध–शैली की विशेषताएँ बताइये। 10

7. (क) 'गोदान' को राष्ट्रीय प्रतिनिधि उपन्यास मानना कहाँ तक उचित है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। 15

(ख) सांस्कृतिक बोध एवं लोकसम्पृक्ति के आलोक में हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों का मूल्यांकन कीजिए। 15

(ग) "'वापसी' टूटते पारिवारिक सम्बन्धों की कहानी है।" इस कथन की विवेचना कीजिए। 10

8. (क) आंचलिक उपन्यास के रूप में 'मैला आंचल' की समीक्षा कीजिए। 15

(ख) जयशंकर प्रसाद की कहानी–कला पर प्रकाश डालिए। 15

(ग) 'कविता' क्या है ? निबन्ध की विशेषताएँ बताइये। 10

SEAL

Teachingninja.in

Scanned with CamScanner

Teachingninja.in